आभार प्रदर्शन

आभार प्रदर्शन

सर्वप्रथम मैं माननीय श्री टी.एस.के. मीनाक्षी सुंदरम, M.A., M.Phil., कुलपति महोदय, अविनाशिलिंगम डीम्ड यूनिवर्सिटी, कोयम्बत्तूर–43 के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने औपचारिक रूप से इस शोध प्रबन्ध की प्रस्तुति के लिए अनुमति प्रदान की है।

मैं सम्माननीया डॉ. (श्रीमती.) शीला रामचन्द्रन, M.Sc., P.G. Dip. Ph.D., (Avinashilingam) उपकुलपति महोदया, अविनाशिलिंगम डीम्ड यूनिवर्सिटी, कोयम्बत्तूर–43 के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिन्होंने शैक्षिक समर्थन एवं औपचारिक अनुमति देकर मेरे इस कार्य को आगे बढ़ाया है और रूपरेखा प्रस्तुतीकरण के समय पर उपस्थित होकर विशेष सुझाव प्रदान किया है।

में आदरणीया डॉ. (श्रीमती.) डी. ललिता, M.A., Dip. Ed., M.Phil., Ph.D., (Bharathiar), भूतपूर्व संकायध्यक्षा महोदया, अविनाशिलिंगम डीम्ड यूनिवर्सिटी, कोयम्बत्तूर–43 के प्रति हार्दिक धन्यवाद प्रकट करती हूँ जिनके यथा समय प्रोत्साहन से मैंने अपने कार्य को पूरा किया है।

मैं अपने विश्वविद्यालय की कुलसचिव महोदया, डॉ. (श्रीमती.) गौरी रामकृष्णन, M.Sc., (Madras) M.Phil., Ph.D., (Avinashilingam), अविनाशिलिंगम डीम्ड यूनिवर्सिटी, कोयम्बत्तूर–43 के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने शैक्षिक तौर पर हमारी सहायता की है।

मैं डॉ. (श्रीमती.) शोभना कोक्काड़न, M.A., M.Phil., Ph.D., (Cochin), हिन्दी विभागाध्यक्षा, अविनाशिलिंगम डीम्ड यूनिवर्सिटी, कोयम्बत्तूर–43 के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ जिन्होंने औपचारिक सहयोग मुझे प्रदान किया है।

एम.फिल (हिन्दी) करते समय डॉ. (श्रीमती.) शशिप्रभा जैन जी के संपर्क वर्ग में उपस्थित होकर मुझे उनके वक्तव्यों को सुनने का अवसर मिला। मैं उनके वक्तयों से अति प्रभावित हुई। हिन्दी भाषा में उनकी प्रवीणता, शिक्षण तथा मार्गदर्शन में उनकी कुशलता देखकर मैंने मन में ठान लिया था कि अगर मुझे पी.एच.ड़ी. करने का मौका मिलेगा तो मैं उनके ही निर्देशन में रहकर करूँगी। भगवान की कृपा से पी.एच.ड़ी. करने का अवसर भी आया। उन्होंने मेरा अनुरोध स्वीकार किया।

मैं अपनी सहृदया तथा सुयोग्या निर्देशिका श्रद्धेया डॉ. (श्रीमती.) शशिप्रभा जैन, M.A., Ph.D (Ranchi), P.G.D.T. (Chennai), असोसियेट प्रोफेसर, अविनाशिलिंगम डीम्ड यूनिवर्सिटी, कोयम्बत्तूर–43 के अनुग्रह एवं आशीर्वाद के कारण ही पी.एच.डी. करने में समर्थ हुई हूँ। आपने विषय चयन से लेकर इस शोध प्रबन्ध को टंकित रूप में प्रस्तुत करने तक पग–पग पर, हर पल मेरा मार्गदर्शन किया है। अनेक संदर्भों में मेरी समस्याओं को सुलझाकर मेरे कार्य को आगे बढ़ाने में उनका सहयोग एवं प्रोत्साहन अत्यधिक विशिष्ट रहा है। मैं उनके प्रति अति कृतज्ञ हूँ।

मेरे पति श्री. टी.के. वेंकटरामन और पुत्र वी. बालकृष्णन, दोनों के सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं है। उनकी प्रेरणा, स्नेह व सहयोग सदैव मेरा संबल रहा है।

इस लेखन कार्य की अवधि में मुझे अपने घनिष्ठ मित्र श्री. बालसुब्रमणिजी एवं उनकी पत्नी से विशेष मदद मिली है। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता के भाव व्यक्त करती हूँ।

पुस्तकालय–कोच्चिन विश्वविद्यालय, कालड़ी विश्वविद्यालय, केलिकट विश्वविद्यालय, अविनाशिलिंगम डीम्ड यूनिवर्सिटी, कोयम्बत्तूर, कन्निमरा पुस्तकालय, चेन्नै, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा पुस्तकालय, चेन्नै, कोयम्बत्तूर जिला पुस्तकालय, कोयम्बत्तूर आदि से मुझे सहायता मिली है। उपर्युक्त संस्थाओं के अधिकारी तथा अन्य कर्मचारियों के प्रति भी मेरे मन में अतीव आभार है।

इस शोध प्रबन्ध को यथासमय आकर्षक रूप में टंकित कर देने वाले टंकक श्री. राघवन, कोयम्बत्तूर के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। उन बंधु–मित्रादियों के प्रति भी मैं ऋणी हूँ जिनके सहयोग ने मुझे इसे पूरा करने की प्रेरणा दी है।

अंत में इस शोध प्रबन्ध की पूर्णता में प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप में सहायता देनेवालों के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ।

के.वी. महालक्ष्मी